बारिश तो हर वर्ष पड़ती है। वो है पा(नी) की वर्षा। दूसरी फिर है ज्ञान की वर्षा, जो कल्प–2 होती है। यह है पतित दुनिया, नर्क। इनको विषय सागर ही कहा जाता है, जिस विषय अर्थात् विकार से वा काम अग्नि से सब जल कर काले बन पड़े हैं। आग लगती है तो आग में मनुष्य पहले काला बन जाता है। तो इस काम अग्नि से भी भारत काला हो गया है। बाप कहते हैं मुझ ज्ञान सागर के बच्चे काम अग्नि से सब काले हो गए हैं। मैं फिर एक ही बार आता हूँ। सबको ज्ञान वर्षा से गौरा बनाता हूँ। इस रावण राज्य, जिसमें काले हो गए हैं, इन सबको फिर पवित्र बना देता हूँ। मूलवतन में कोई पतित नहीं रहते। अभी यह पतित दुनिया है तो सबके ऊपर ज्ञान वर्षा चाहिए। ज्ञान वर्षा से फिर सारी दुनिया पवित्र बन जाती है। दुनिया यह नहीं जानती कि हम काले, पतित हो गए हैं। सतयुग में सारी दुनिया पवित्र रहती है। वहाँ पतित का नाम–निशान नहीं रहता। इसलिए विष्णु को खीर सागर में दिखाते हैं। इसका अर्थ भी मनुष्य नहीं जानते। तुम समझते हो यह ल०ना० ही हैं। कहते हैं वहाँ घी की नदियाँ बहती हैं। तो ज़रूर खारे सागर चाहिए। यह विद्वान–पंडितों आदि ने चटके बना दिए हैं। समझते कुछ नहीं हैं। विष्णु भगवान कहते हैं। तुम विष्णु को भगवान नहीं कह सकते। विष्णु देवता नमः, ब्रह्मा देवता नमः कहते हैं। विष्णु भगवान नमः नहीं कहेंगे। शिव परमात्मा नमः शोभता है। अभी तुम बच्चों को रोशनी मिली है। ऊँच ते ऊँच श्री–श्री 108 रुद्रमाला कहा जाता है। ऊपर में है फूल। फिर युगल दाने को मेरु कहा जाता है। ल०ना० ही कहते हैं। ब्रह्मा–सरस्वती को युगल नहीं कहा जाता। यह माला शुद्ध है ना। मेरु फिर ल०ना० को कहा जाता। प्रवृत्तिमार्ग है ना। विष्णु अर्थात् ल०ना० की डिनायस्टी। सिर्फ ल०ना० कहते हैं; परन्तु उन्हों की संतान भी होगी ना। यह किसको पता नहीं है। अभी तुम बच्चे विषय सागर से निकलते हो। इनको काली देह भी कहा जाता है। उनमें सर्प–सपर्णी रहते हैं। स्वर्ग में तो कुछ होता नहीं। नाग पर डांस की, यह किया, यह सब दंत कथाएँ हैं। ब्लाइंड फेथ से गुडियों की पूजा करते रहते हैं। बहुत देवियों की मूर्तियाँ बनाते हैं। लाखों–करोड़ों रुप(ये) खर्च करते हैं। कितनी गुड़ियाँ बनाते हैं। लक्ष्मी, काली, सरस्वती आदि बहुत बनाते हैं। धनवान लोग बहुत खर्चा कर देवियों को सिंगारते हैं। कोई तो सच्चे सोने के भी ज़ेवर पहनाते हैं; क्योंकि ब्राह्मणों को दान करना होता है। ब्राह्मण जो पूजा कराते हैं, बहुत खर्चा करते हैं। धूमधाम से देवियाँ निकालते हैं। जैसे मुसलमान लोग ..... देवियाँ निकालते हैं। आगे फिर डुबो देते थे। आजकल शायद रखते हैं। खर्चा तो होता है ना। गुड़ियों को भी डुबो देते। क्रियेट कर फिर पालना कर फिर संहार कर देते। इसको कहा जाता है गुड्डी पूजा। तुम भाषण में भी समझा सकते हो कैसे यह अंधश्रद्धा की पूजा है। गणेश भी बहुत अच्छा बनाते हैं। अब सूँड़ वाले वा पूँछ वाले मनुष्य तो होते नहीं। कितने चित्र बनाते हैं। पैसा खर्च करते हैं। बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं, तुमको अभी हम कितना साहुकार, एकदम विश्व का मालिक बनाते हैं। यह आत्माओं को परमात्मा बाप बैठ समझाते हैं। यह भी जानते हैं जिन्होंने कल्प पहले पढ़ा है और श्रीमत पर चले हैं वही चलेंगे। ना पढ़ेंगे, रुलेंगे तो होंगे खराब। दास–दासियाँ कम पद पावेगी। अभी तुम बच्चों को अविनाशी ज्ञान रत्नों से कितना साहुकार बना रहे हैं। वो लोग तो शिव–शंकर का अर्थ नहीं जानते। शंकर के आगे जाकर कहते झोली भर दे; परन्तु शंकर तो झोली भरते नहीं हैं। वो तो विनाश करने वाले हैं। अभी बच्चों को अविनाशी ज्ञान रत्न देते हैं। वो धारण करने हैं। एक–2 रत्न लाख रुपए का है। तो अच्छी रीति धारण कर और धारण करानी है। दान करना पड़े ना। बाबा ने समझाया है दान भी आसामी देख करो। जिनकी सुनने की दिल ही नहीं उनके पिछाड़ी टाइम वेस्ट नहीं करो। शिव के पुजारी हो, देवताओं के पुजारी हो, ऐसे को कोशिश करके दान देना है तो तुम्हारा टाइम वेस्ट ना जा(वे)। तुम हरेक को रूप–बसंत बनना है। जैसे बाबा रूप–बंसत है ना। उनका रूप ज्योतिर्लिंगम नहीं, स्टार है। प०पि०प० है, परमधाम में रहने वाला है। परमधाम परे ते परे है ना। आत्माओं को तो परमात्मा नहीं कहेंगे।

वो परम–आत्मा है। यहाँ जो दुखी आत्माएँ हैं वो परम–आत्मा को बुलाते हैं। उनको सुप्रीम आत्मा कहा जाता है। वो बिन्दी मिसल है। ऐसे नहीं कि उनका कोई नाम–रूप नहीं है। नाम–रूप तो है ना। ज्ञान का सागर है, सत्–चित–आनंद स्वरूप है, पतित–पावन है। दुनिया तो नहीं जानती। पूछो, परमात्मा कहाँ है? तो कह देंगे, सर्वव्यापी है। अरे, उनको पतित–पावन कहते हैं तो पावन कैसे बनावेंगे। कुछ भी समझते नहीं। अंधेरी नगरी... क्या–2 बकते रहते हैं। आगे तो गुरुओं आदि से शास्त्र सुन फिर उनको पाँव पड़ते थे। बाबा ने हर बात से छुड़ा दिया है। बाबा अभोक्ता, असोचता है। कभी पाँव पर गिरने नहीं देते। बच्चों को गिरना नहीं होता है; परन्तु यह रसम चली है, छोटे बड़ों का रिगार्ड रखते हैं। वास्तव में तो बच्चा वारिस बनता है बाप का। बाप कहते हैं, यह मालिक है, हमारी सारी जायदाद का मालिक है। मालिक को नमस्ते करते हैं। भल बाप मालिक है; परन्तु सच्चा मालिक तो (बच्चे) को ही कहेंगे ना, जो उनकी सारी मिल्कियत का मालिक बनते हैं। तुम बच्चे भी मालिक बनते हो। तुमको ऐसे थोड़े ही कहेंगे पाँव पड़ो, यह करो। नहीं। गोद में बच्चे आते हैं तो भी बाबा कहते हैं शिवबाबा को याद कर फिर गोद में आना है, नहीं तो पाप लग जावेगा। बाप कितना खबरदार करते हैं। एक शिवबाबा को ही याद करना है। हम शिवबाबा की गोद में आते हैं। आत्मा कहती है मैं शिवबाबा की गोद लेती हूँ। मनुष्य (इन) बातों में मूँझते हैं। माँ–बाप गोद (लेते) हैं ना। शिवबाबा है और इनसे एडॉप्टेड करते हैं। तो यह ..... माँ हो गई। वर्सा तो तुमको शिवबाबा से मिलता है। इसलिए उनकी याद में रहना है। बाप जो समझाते हैं उसको धारण करना है। रूप–बसंत बनना है। योग में रहेंगे और ज्ञान धारण कर कराते रहेंगे तो मेरे समान तुम रूप–बसन्त हो जावेंगे। फिर मेरे साथ चल पड़ेंगे। तुम्हारी आत्मा में ज्ञान होगा, फिर स्वर्ग में आवेंगे तो ज्ञान पूरा हो जावेगा, फिर प्रालब्ध शुरू हो जावेगी। नॉलेज की प्रालब्ध मिल जाती फिर नॉलेज का पार्ट पूरा हो जाता। यह है गुह्य बातें, जो मुश्किल किसकी बुद्धि में बैठता है। बूढ़ियों को भी बाप समझाते हैं, एक को याद करो, दूसरा ना कोई। बाप को याद करो तो तुम बाप के पास जाए फिर कृष्णपुरी में चले जावेंगे। यह है कंस पुरी। ऐसे नहीं कृष्णपुरी में कंस भी थे। यह सब हैं दंत कथाएँ। दिखाते हैं कृष्ण की माँ को 8 बच्चे थे। यह तो गालियाँ हुईं। मूर्ख बुद्धि क्या–2 बकते रहते हैं। कृष्ण को टोकरी में डाल भगाया। गंगा के पार ले गए फिर गंगा नीचे चली गई। वहाँ तो यह बातें होती नहीं। यह सब हैं दंत कथाएँ। बाप बैठ समझाते हैं (तुम) भागवत आदि शास्त्रों को कितना प्रेम से पढ़ते हो। सीता को चुराया, फिर एक ऋषि पास छोड़ा, यह सब हैं (दंत) कथाएँ। वहाँ तो धर्म का उपकार था। शेर–बकरी इकट्ठे (जल) पीते थे। रावण राज्य तो (नहीं) है। सतयुग–त्रेता में कहाँ से आया। तो पहले यह निश्चय बैठना चाहिए। बाबा सच ही सुनाते हैं। बाकी जो कुछ पढ़ा है वो झूठ, जिससे तमोप्रधान बन पड़े हो। अभी तुम बच्चों को रोशनी मिली है। आगे जो कुछ सुना है वह भूल जाना है। बाप कहते हैं इन यज्ञ–तप आदि से मेरे साथ कोई मिल नहीं सकते। यह सब झूठी बातें हैं। आत्मा तमोप्रधान बनने से उनके पर टूट जाते हैं। अब इस सारी दुनिया को आग लगनी है। वो फिर होलिका बनाते हैं। आग में कोकी पकाते हैं। है यह बात। शरीर सब जल जाते हैं बाकी आत्मा अमर बन जाती है। बेहद की बात है ना। अभी तुम बच्चे समझ सकते हो सतयुग में इतने मनुष्य, इतने धर्म होते नहीं। सिर्फ एक ही आदि सनातन देवी–देवता धर्म रहता है। भारत जैसा पवित्र खण्ड कोई होता नहीं। भारत सबका यात्रा स्थान है। शिवबाबा ही सभी पतितों को पावन बनाने वाला है। उनका मंदिर बहुत ऊँच था जिसको लूटा है। भारत ही सबसे बड़ा तीर्थ स्थान है। ....काशी वास करेंगे।

जहाँ शिव है वहाँ ही हम शरीर छोड़ेंगे। बहुत साधु लोग जाकर बैठते हैं। सारा दिन यही गाते रहते हैं जय विश्वनाथ गंगा। शिव के द्वारा पानी की गंगा तो निकल नहीं सकती। शिव के दर पर मरना पसंद करते हैं। अभी तुम तो प्रैक्टिकल में दर पर हो। कहाँ भी हो; परन्तु शिवबाबा को याद करते रहो। जानते हो, शिवबाबा हमारा बाप है। उनको याद करते–2 उनके पास चले जावेंगे। तो शिवबाबा पर इतना लव होना चाहिए ना। उनका कोई बाप नहीं, टीचर नहीं, और सबके तो होते ही हैं। ब्र०वि०शं० का भी रचता वो है ना। रचना से रचना को, फिर भल कोई भी हो, रचना से वर्सा मिल नहीं सकता। वर्सा हमेशा बाप से बच्चों को मिलता है। तुम बच्चे जानते हो हम ज्ञान सागर पास आए हैं। बाप ज्ञान की वर्षा बरसा रहे हैं। तुम अभी पावन बन रहे हो। बाकी तो सब अपना हिसाब–किताब चुक्तू कर अपने–2 धर्म में चले जावेंगे। मूलवतन में आत्माओं का झाड़ है। (वहाँ) भी साकार (झाड़) है। वहाँ है रुद्रमाला, यहाँ फिर है विष्णु की माला। फिर छोटी–2 बिरादरियाँ निकलती आती हैं। बिरादरियाँ निकलते–2 झाड़ बड़ा हो जाता है। अभी फिर सबको वापिस जाना है। फिर देवी–देवता धर्म को राज करना है। अभी तुम मनुष्य से देवता, विश्व के मालिक बन रहे हो। तो बहुत खुशी होनी चाहिए। भगवान हमको पढ़ाते हैं। क्या पढ़ाते हैं? राजयोग और ज्ञान। राजाओं का राजा बनाते हैं। सूर्यवंशी नर से ना०, नारी से लक्ष्मी बनावेंगे। सूर्यवंशी फिर चंद्रवंशी में आवेंगे। बाबा रोज़ समझाते रोशनी देते रहते हैं। तुम बादल सागर पास आते हो भरने लिए। भर कर फिर जाकर बरसना है। बरसेंगे नहीं तो राजाई पद पा ना सकेंगे, प्रजा में चले जावेंगे। कोशिश कर जितना हो सके बाप को याद करना है। यहाँ तो कोई किसको, कोई किसको याद करते रहते। कोई किस देवी को याद करते रहते। अथाह नाम हैं। अनेक गुरुओं को मानने वाले हैं। देहली में जमुना के कंठे पर देखो बहुत ही मकान बने हुए हैं। सन्यासी लोग बैठे रहते हैं। शिवोहम् कहते रहते हैं और यह अबलाएँ, मेल्स अथवा फिमेल्स जाकर उनके ऊपर फूल चढ़ाते हैं। हे भगवान, हे भगवान कहते रहते हैं। कितनी ठगी है! अब उनको गवर्मेन्ट नहीं निकाल सकती। इस ठगी को बंद करने वाला एक ही बाप है। सतयुग में कोई भी ठगी होती नहीं। शास्त्रों में भी एडल्ट्रेशन है। नहीं तो सन्यासियों को कब मानना ना चाहिए। वो तो हमजिन्स को विधवा बनाय दुखी बनाय जाते। फिर माताएँ जाए उन्हों के चरण धोकर पीती हैं। ज्ञान तो कुछ भी है नहीं। अभी थोड़े ही तुम उन्हों के पास जावेंगी। बाप आकर कहते हैं वन्दे मातरम्। दिखाते भी हैं द्रौपदी के चरण दबाए। बाबा पास बुढ़ियाँ आती हैं तो कहते हैं बच्ची थक गई हो। अब बाकी थोड़े रोज़ है। घर बैठे भी तुम शिवबाबा को और वर्से को याद करो। जितना याद करेंगे उतना विकर्माजीत बनेंगे। आप समान औरों को ना बनावेंगे तो प्रजा कैसे बनेगी। बहुत मेहनत करनी है। धारणा और फिर आप समान बनाना है। अच्छा, यादप्यार और गुडमॉर्निंग। ॐ।